Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 9, Issue 3&4 - 2024, Pg. No. 24-27
Peer Reviewed Journal

Research Article

भारत की महिमा कवियों की वाणी – कालिदास के सन्दर्भ मे

Usha Sharma

Assistant Professor, S. S. Jain Subodh Mahila Shikshak Prashikshan Mahavidyalaya, Sanganer, Jaipur, India.

DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202406

I N F O

E-mail Id:
ushasharma575@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0009-0000-6660-0533

Date of Submission: 2024-07-10
Date of Acceptance: 2024-10-15

सारांश

भारत एक प्राचीन भूमि है। इसकी महानता के बारे में जितना कहा जाए कम है। यहाँ का शांत व समृद्ध वातावरण मनुष्य को जीने का बेहतर मौका ही नहीं देता बल्कि उसे एक सही सोच से भी सम्पन्न करता है। भारत एक समृद्ध देश है जहाँ साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में महान लोगों ने जन्म लिया है। यहाँ की संस्कृति विश्व की पुरानी संस्कृति है जिसका सभी अनुसरण करते है। वैसे तो भारत में अनेक कवियों–मनीशियों ने अपनी लेखनी से साहित्य को समृद्ध किया है एवं भारत की महिमा का बखान किया है किन्तु कालिदास जिन्हें कवि कुल गुरू, दीपशिखा कालिदास, कविशिरोमणि, उपमा कालिदास आदि संज्ञाओं से विभूशित किया गया है। उनकी वाणी व साहित्य रचना में भारत के गुणगान का हम यहाँ दर्शन करेंगे।समाज की सुव्यवस्था होने पर ही व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। इस प्रकार समाज तथा व्यक्ति का परस्पर अभ्युदय भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य है। भारत ने अपनी संस्कृति व सभ्यता को सदैव अक्षुण रखा है। वह सदैव विष्व गुरू बन कर जगत को आदर्शों का पाठ पढ़ाता आया है और आज भी विश्व यहाँ की संस्कृति का अनुगम न करता है। लोगों को यह बताने से बेहतर बात और क्या होगी कि जो ख्वाब वे देखते है वे सच हो सकते। यह कि उनके पास वह सब कुछ हो सकता है जो अच्छे जीवन के लिए जरूरी है स्वास्थ्य, शिक्षा अपनी मंजिल तक पहुँचने की आजादी और इन सबसे बढ़कर शांति।

मुख्य शब्द: प्राचीन - पुराना, विभूषित - सुशोभित, न्योछावर - वारना, अक्षुण -स्थायी, गरीयसी-श्रेष्ठ, चोटियाँ - शिखर, नदारद - गायब

प्रस्तावना

भारत एक प्राचीन भूमि है। इसकी महानता के बारे में जितना कहा जाए कम है। यहाँ का शांत व समृद्ध वातावरण मनुष्य को जीने का बेहतर मौका ही नहीं देता बल्कि उसे एक सही सोच से भी सम्पन्न करता है। मेरा देश भारत षिव, पार्वती, कृष्ण, हनुमान, बुद्ध, महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानन्द और कबीर–कालिदास आदि जैसे महापुरूषों की धरती है। भारत में जीवन के भारतीय दर्शन का अनुसरण किया जाता है जो सनातन धर्म कहलाता है। यहाँ प्राचीन समय के अनेक सुन्दर प्राकृतिक दृश्य, स्थल, स्मारक, ऐतिहासिक धरोहर आदि है। भारत अपने आध्यात्मिक कार्यो, योगा, आदि के कारण भी देश–विदेश के लोगों को अपनी ओर आकर्शित करता है। भारत विविधता में एकता के लिए भी विश्व में प्रसिद्ध है। भारतवासी इसे मातृभूमि मान कर इसकी पूजा करते है और सदैव अपने प्राण न्यौछावर करने के लिए तत्पर रहते है। जब राम ने रावण का वध किया और सोने की लंका पर विजय प्राप्त की तब वे लक्ष्मण से कहते है–

''अपि स्वर्णमयी लंका, न मे लक्ष्मण रोचते।
जननि जन्मभूमिष्च स्वर्गाद·पि गरीयसि।।''

अर्थात् हे लक्ष्मण ये लंका सोने की है किंतु फिर भी ये मुझे अच्छी नहीं लगती है। मेरी जन्मभूमि मेरी माता है जो मुझे स्वर्ग से भी सुन्दर और प्रिय है। कहने का आशय है कि प्रत्येक युग में कवियों ने भारत महिमा का गुणगान किया है।

भारत एक ऐसा देश है जो कभी सोने की चिड़िया के नाम से जाना जाता था, जो अपने गर्भ में अमूल्य रत्नो, संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों को संजोए हुए है। जहाँ की संस्कृति ने हमें एक ओर

Copyright (c) 2024: Author(s). Published by Advanced Research Publications

भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस, महात्मा गांधी, सुखदेव, सुभाष चन्द्र बोस जैसे वीर क्रान्तिकारी दिए जिन्होंने अपने देश की आन–बान–शान के लिए अपना जीवन ही नहीं बल्कि अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया वहीं दूसरी ओर हमें महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, पृथ्वीराज चौळान जैसे वीर व साहसी योद्धा दिए जिन्होंने हमारे देश की सफल बागड़ोर सम्भाली। क्रान्तिकारी ही नहीं, योद्धा ही नहीं अपितु झाँसी की रानी, पन्नाधाय, कस्तूरबा गांधी जैसी वीरांगनाएं भी दी जिन्होंने अपने देश व कर्त्तव्य के लिए अपना सबकुछ कुर्बान कर दिया। धन्य है भारत की यह धरती जिसने इतनी कठिनाईयों एवं विप्लवों के बाद भी अपना धैर्य नहीं खोया और सभी शरणागतों को अतीत में भी आश्रय देता रहा है और वर्तमान में भी आश्रय दे रहा है।

भारत एक समृद्ध देश है जहाँ साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में महान लोगों ने जन्म लिया है। यहाँ की संस्कृति विश्व की पुरानी संस्कृति है जिसका सभी अनुसरण करते है। यहां प्रकृति का हर रंग देखा जा सकता है यहाँ एक ओर समुद्र है तो दूसरी ओर घने जंगल है। एक तरफ रेगिस्तान है तो दूसरी ओर बर्फीले हिमालय की चोटियाँ। कहीं ऊंचे–ऊंचे पहाड़ है तो कहीं मैदानी इलाके है। यहाँ के मौसम में चार ऋतुएं समाविष्ट है जिनका वर्णन कवियों की रचनाओं को आधार प्रदान करता है। इन्हीं ऋतुओं का वर्णन करते हुए महाकवि कालिदास ने ''ऋतुसंहार'' नामक गीती काव्य की रचना की थी। यहाँ के कवि अपनी समृद्ध भाषा और संस्कृति से यहां के ज्ञान का प्रचार–प्रसार करते रहे है। यहाँ का साहित्य मानव को ज्ञान व नैतिकता का मार्ग दिखाता है। कथा, कहानियों, कविताओं के माध्यम से व्यक्ति को शिक्षित, समझदार, संवेदनशील, साहसी और जिम्मेदार बनाया जाता है।[1,2]

मेरा देश भारत जो विश्वगुरू माना जाता था। जहाँ आज भी अनेक धर्मो, सम्प्रदायों व संस्कृतियों के लोग निवास करते है जो रंग, रूप, जाति, वर्ण, नस्ल, भाषा, पद, लिंग के आधार पर एक–दूसरे से पर्याप्त असमानता रखते है। जहाँ प्राचीन समय में इनमें किसी प्रकार का द्वेष, ईर्ष्या, मतभेद, भेदभाव नहीं था। आज वह प्रेम, भाईचारा, सहानुभूति, सौहार्द्र सभी के दिलो से लुप्त होते जा रहे है आज व्यक्ति शरीर केन्द्रित होकर स्वार्थी, अहंकारी, भ्रष्टाचारी, अत्याचारी होता जा रहा है। आज सभी तरफ अशान्ति व मूल्यों का ह्रास होता नजर आ रहा है मानवता कहीं खोती जा रही है। विश्वबंधुत्व, वसुधैव कुटुम्बकम सर्वधर्म समभाव, सर्वे भवन्तु सुखिनः, ये सभी भाव मानव के जीवन से नदारद हो गए है। आज मानव धन लोलुप, सत्ता लोलुप बना केवल अपने स्वार्थ को प्राथमिकता दे रहा है। परोपकार, परहित उसके आचरण में अवशेष रूप में भी परिलक्षित नहीं होते है।

मानव जीवन से सहअस्तित्व का भाव समाप्त हो गया है उसमें धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा के भाव समाप्त हो गए है उसमें परहिताय का स्थान स्वहिताय ने ले लिया है। आज की इस अशान्त, भयावह व गम्भीर स्थिति को देखते हुए हमे पुनः विचार मन्थन की अत्यावश्यकता है जो हमारे भारत देश के स्वरूप को आदर्श रूप में पुननिर्मित करे।

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा है।

'हे भारतीय युवक
ज्ञानी–विज्ञानी
मानवता के प्रेमी
संकीर्ण तुच्छ लक्ष्य
की लालसा पाप है।
मेरे सपने बड़े
मैं मेहनत करूँगा
मेरा देश महान हो
धनवान हो, गुणवान हो
यह प्रेरणा का भाव अमूल्य है,
कहीं भी धरती पर,
उससे ऊपर या नीचे
दीप जलाए रखूँगा
जिससे मेरा देश महान।'

वैसे तो भारत में अनेक कवियों–मनीशियों ने अपनी लेखनी से साहित्य को समृद्ध किया है एवं भारत की महिमा का बखान किया है किन्तु कालिदास जिन्हें कवि कुल गुरू, दीपशिखा कालिदास, कविशिरोमणि, उपमा कालिदास आदि संज्ञाओं से विभूशित किया गया है। उनकी वाणी व साहित्य रचना में भारत के गुणगान का हम यहाँ दर्शन करेंगे।

महाकवि कालिदास राष्ट्रीय कवि है। वे भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति के प्रतीक है। इस विशाल तथा विराट देश की संस्कृति कालिदास की वाणी में बोलती है तथा उनके नाटकों में अपना भव्य रूप दिखलाकर मानव मात्र को आह्लादित करती है। महाकवि की रचनाओं में कल्याण का स्वरूप दृष्टिगत होता है। इस महाकवि की वाणी में जिस प्रकार आदि–कवि वाल्मीकि की रसमयी धारा प्रवाहित होती है उसी प्रकार गीता तथा उपनिशदों का अध्यात्म ज्ञान भी मञ्जुल रूप में प्राप्त होता है। इनकी वाणी में इतना रस है, ओज है कि दो हजार वर्षों के दीर्घ काल ने भी उसमें किसी प्रकार की विकृति नहीं आने दी। वैदिक धर्म तथा संस्कृति का जो भव्य रूप इनके काव्यों में दिखाई देता है, वह नितान्त सजीव है। [3]

मानव–कल्याण हेतु इनके काव्यों में मधुर शब्दों में पग–पग पर उपदेश दिए गए है। आज का मानव–समाज परस्पर कलह तथा वैमनस्य से छिन्न–भिन्न हो रहा है। तीव्र वैर–विरोध के कारण संसार की अनेक जातियाँ अपना–सर्वस्व स्वाहा कर रही है। विश्व नितान्त उद्विग्न है। मानवता के लिए महान संकट का समय चल रहा है। इसे ही कलयुग कहा गया है।

महाकवि कालिदास की उक्ति है कि देहधारियों के लिए मरण ही प्रकृति है, जीवन तो विकृतिमात्र है। यदि जन्तु श्वास लेता हुआ एक

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202406

क्षण के लिए भी जीवित है तो यह उसके लिए उपयोगी है। इस जीवन को महान लाभ समझना चाहिए तथा इसे सार्थक बनाने के लिए धर्म, अर्थ और काम का सामञ्जस्य स्थापित करना चाहिए। इस त्रिवर्ग में धर्म ही सर्वश्रेष्ठ है। परन्तु अर्थ और काम अपनी प्रभुता बनाए रखने के लिए धर्म का विरोध करते रहे हैं। धर्म का दमन अर्थ अपनी प्रबलता चाहता है और धर्म को ध्वस्त करके काम भी अपना प्रभाव स्थापित करना चाहता है।

आज विश्व में सर्वत्र धर्म विरोधी अर्थ और काम का नग्न नाच हो रहा है। धर्म कहीं दृष्टिगत नहीं होता। धर्म–सिद्धी का प्रधान–साधन है–'तपस्या'। बिना अपना शरीर तपाए, बिना हृदय–स्थित दुर्वासना जलाए, धर्म की भावना जागृत नहीं होती। महाकवि कालिदास ने काम का जलना दिखाकर इसी तथ्य को उद्घाटित किया है। पार्वती ने घोर तपस्या करके अपना अभीष्ट प्राप्त किया। कवि की दृष्टि में काम तथा धर्म के परस्पर संघर्ष में हमें काम का दमन उसे धर्मानुकूल बनाना ही पड़ेगा। जगत का कल्याण इसी भावना में फलीभूत होता है।

महाकवि कालिदास वैयक्तिक प्रगति की उपेक्षा सामाजिक उन्नति के पक्षधर हैं। उनका समाज श्रुति–स्मृति की पद्धति पर निर्मित समाज है। उनके द्वारा चित्रित परपति भारतीय समाज का अनुकरण ीय आदर्श उपस्थित करते हैं। राजा लोग दान देने के लिए धन इकट्ठा करते हैं, सत्य के लिए कम बोलते हैं यश के लिए विजय की अभिलाषा रखते हैं, प्राणियों तथा राष्ट्रों को पददलित करने के लिए नहीं। गृहस्थाश्रम में सन्तान उत्पन्न करने के लिए निरत होता है, कामवासना की पूर्ति के लिए नहीं। वे शैशव में विद्या का अभ्यास करते हैं, यौवन में विषय के अभिलाषी हैं, वृद्धावस्था में मुनिवृत्ति धारण करके योग द्वारा अपना शरीर छोड़कर परम पद में लीन हो जाते हैं।

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।

यज्ञ – उपनिषदों में धर्म के तीन आधार स्तम्भ प्रतिपादित हैं– यज्ञ, अध्ययन और दान। जिसने इन तीनों के मध्य समन्वय स्थापित किया वह परम सुख की प्राप्ति करता है। कठोपनिषद में भी कहा गया है– ''त्रिकर्म कृत तरति जन्ममृत्यु'' अर्थात् इन तीना कर्मों को करने वाला जन्म व मृत्यु से पार पा जाता है। इनके अतिरिक्त 'तपः' की महिमा से भारतीय धार्मिक साहित्य भरा पड़ा है। महाकवि ने इन स्कन्धों का विवेचन स्थान–स्थान पर बड़ी ही सरल व सहज भाषा में किया है। रघुवंश में राजा दिलीप इस बात को भली–भांति जानते हैं कि वशिष्ठ जी के विधिपूर्वक सम्पादित होम के द्वारा जल की ऐसी वृष्टि होती है, जो अकाल से सूखे खेतों को हरा–भरा कर देती है। राजा दिलीप अपनी प्रजा से जो कर या लगान लेते थे वह इन्द्र को प्रसन्न करने के लिए यज्ञ में लगा देते थे (क्योंकि यज्ञ करने से देवता प्रसन्न और पुष्ट होते हैं।) उधर इन्द्र भी इनसे प्रसन्न होकर आकाष को दुहकर जल बरसाता था। जिससे खेत अन्न से लहलहा जाते थे। इस प्रकार नरराज और देवराज एक दूसरे की सहायता करके दोनों लोकों का पालन करते चलते थे।[4]

दान – दान की वैभव गाथा गाते हुए महाकवि कभी श्रान्त नहीं होते। समाज आदान–प्रदान की भित्ति पर अवलम्बित है। धनवान व्यक्ति का संचित धन केवल अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए नहीं है, प्रत्युत उसका सदुपयोग उन निर्धनों की क्षुधा शांत करने के लिए भी है जो समाज का अभिन्न अंग है। बृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है कि दाम्यत (अपनी इन्द्रियों को वश में रखो), दत्त (दान दो) तथा दयध्वम् (दया करो) दान के बिना समाज छिन्न–भिन्न होकर ध्वस्त हो जायेगा, इसमें संदेह नहीं। कालिदास ने रघुवंश के पंचम सर्ग में दान का बड़ा ही उज्जवल दृष्टांत प्रस्तुत किया है। वरतन्तु के शिष्य कौत्स गुरूदक्षिणा के लिए जब रघु के पास आते हैं, तब उन्होंने अपनी सारी संचित सम्पत्ति यज्ञ में दान दे डाली है।

रघु अलकापुरी पर चढ़ाई करके यक्षराज कुबरे से धन पाने का प्रयास करते हैं। इतने में कोष में सोने की वृष्टि होती है। राजा का आग्रह है– ऋषि सम्पूर्ण धन ले जाये और उधर ऋषि का आग्रह है कि वह अपने काम से अधिक एक कौड़ी भी न लेंगे। दाता और ग्रहीता का यह आग्रह आश्चर्यजनक है। जो अन्यत्र दुर्लभ है। यही त्याग भाव सदैव भारत की संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहा है जहां भामाशाह जैसे दान दाताओं ने देश हित को सर्वोपरि मान कर अपना सर्वस्व महाराणा प्रताप के हाथों सौंप दिया। रानी लक्ष्मी बाई ने सम्पूर्ण राज–पाट त्याग कर देश सेवा हेतु कमर कस ली। इस प्रकार के अनेकों उदाहरणों से भारतीय इतिहास भरा पड़ा है जो भारत की संस्कृति को महिमा मण्डित करता है।

तप – तप भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र है। इसकी आराधना और साधना से मनुष्य अपनी सारी कामनाओं की पूर्ति ही नहीं करता, वरन् परोपकार के लिए यथावत् योग्यता का भी अर्जन करता है। महाकवि कालिदास ने पार्वती के तप का रहस्य विशेष रूप से प्रकट किया है। मदन–दहन के अनन्तर भग्नमनोरथा पार्वती जी ने तप को ही अपना एकमात्र आश्रय बनाया। जगत की समस्त आशाएँ छोड़कर वे इसकी सिद्धि में लग गई। उनकी तपस्या इतनी कठोर थी कि कठिन शरीर से उपार्जित मुनियों की तपस्या भी उनके सामने नितान्त प्रभाहीन तथा प्रभावहीन जान पड़ती थी। प्रकृति के नाना प्रकार के विशम कष्टो को झेलकर वे अपनी मनोकामना–सिद्धि में सफल होती हैं। यह पार्वती की तपस्या का ही फल था– 'तथाविधं प्रेम' अलौकिक उच्च कोटि का प्रेम और 'तादृषः पतिः' उस प्रकार का मृत्यु को जीतने वाला महादेव रूप पति प्राप्त हुआ। भगवान शंकर ने पार्वती को अपने मस्तक पर स्थान दिया है उनके शब्द कि, ''आज से मैं तुम्हारी तपस्या से मोल लिया दास हूँ।'' आदर व सम्मान की पराकाष्ठा है। अन्य किसी भी देवता ने अपनी पत्नी को इतना गौरव नहीं प्रदान किया। भारतीय कन्याओं के लिए गौरव की यह साधना अनुकरणीय वस्तु है शास्त्रों ने भी नारी को एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है और कहा गया है कि जहाँ नारियों की पूजा की जाती है वहां देवता भी विचरण करते है– ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' इसी तथ्य के आधार पर स्त्रियों को लक्ष्मी, पार्वती सरस्वती एवं दुर्गा आदि रूपों में पूजा जाता है। इसे जगत जननी जगदम्बा के रूप में अभिहित किया जाता है। यही कारण है कि भारतीय समाज में कन्याओं के सामने एक ही महान आदर्श है और वह है पार्वती का। तपस्या करने वाले ऋशियों के

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202406

भीतर विचित्र तेज छिपा रहता है। वे स्वयं शांति में रहते है, सूर्यकांत मणि की भांति वे छूने में बड़े कोमल है, परन्तु दूसरे तेज के द्वारा अभिभूत होते ही वे जलता हुआ तेज वमन करते है। वे किसी की घर्षणा सह नहीं सकते। यही तपस्या का प्रभाव है–

शमप्रधानेषु तपोधनेषु गूढं हि दाहात्मकमस्ति तेजः।

स्पर्शानुकूला इव सूर्यकान्तास्तदन्यतेजोऽभिभवाद्वमन्ति।। शकु.2/7

विश्व की शांति भंग करने वाली वस्तु का नाम स्वार्थपरायणता है। मनुष्य को तीन तकारादि शब्द– त्याग, तप तथा तपोवन को अपने जीवन में धारण करने की आवश्यकता है। भयानक संघर्ष का यही निदान है। महाकवि कालिदास की अवधारणा में तपोवन की गोद में पली हुई सभ्यता मानव का सच्चा मंगल कर सकती है। जिसने हमारे देश को भारतवर्ष जैसा मन्जुल नाम प्रदान किया, उस भारत का जन्म महर्षि मारीच के आश्रम में हुआ। गोचरण का फल रघु के जन्म के रूप में प्रकट हुआ। दिलीप ने अपनी राजधानी का परित्याग करके महर्षि वशिष्ठ के आश्रम में निवास किया तथा गुरू की गाय की विधिवत् सेवा की। उसी का फल हुआ– इन्द्र जैसे वज्रधारी के मानमर्दन करने वाले वीर का उदय।[5]

जब तक यह संसार त्याग और तपस्या का आश्रय लेकर तपोवन की ओर न मुड़ेगा, तब तक इसकी अशांति कभी न बुझेगी, पारस्परिक कलह कभी न समाप्त होगा तथा वैमनस्य का नाश कभी न होगा। समाज की सुव्यवस्था होने पर ही व्यक्ति अपनी आध्यात्मिक उन्नति कर सकता है। इस प्रकार समाज तथा व्यक्ति का परस्पर अभ्युदय भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य है। भारत ने अपनी संस्कृति व सभ्यता को सदैव अक्षुण रखा है। वह सदैव विश्व गुरू बन कर जगत को आदर्शों का पाठ पढ़ाता आया है और आज भी विश्व यहाँ की संस्कृति का अनुगम न करता है।

जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं हो कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

अपने स्तर पर मुझे इस बात का पूरा भरोसा है कि भारत के पास खुद को विकसित राष्ट्र के रूप में बदलने की क्षमता मौजूद है। अंतरिक्ष, रक्षा तथा परमाणु क्षेत्रों में अपनी परियोजनाओं के जरिये हम यह जान चुके है कि हमारे देशवासियों के पास श्रेष्ठ को हासिल करने की योग्यता है हमारे पास ज्ञान और विश्वास का ऐसा अद्भूत मिश्रण है जो हमें इस पृथ्वी के अन्य देशों से अलग खड़ा करता है। हम यह भी जानते है कि इन अनूठी क्षमताओं का लाभ नहीं उठाया गया है। क्योंकि हमें दूसरों की क्षमता स्वीकारने और शांत बने रहने की आदत सी पड़ चुकी है। लोगों को यह बताने से बेहतर बात और क्या होगी कि जो ख्वाब वे देखते है वे सच हो सकते। यह कि उनके पास वह सब कुछ हो सकता है जो अच्छे जीवन के लिए जरूरी है – स्वास्थ्य, शिक्षा अपनी मंजिल तक पहुँचने की आजादी और इन सबसे बढ़कर शांति।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डबराल,प्रदीप (2022) भारत महिमा , BFC Publication
2. बाराम,ए.एल अद्भुत भारत, शिवालय अग्रवाल एंड कम्पनी
3. एस. जयशंकर (2024) विश्वबन्धु भारत , Rupa Publication
4. Idea of Bharat डॉ. ए.के. मित्तल., डॉ. संजय कमठनिया, sahitya bhawan Publication
5. प्रकाश वैभव ओउम भारत पाण्डेय (2020) , National Book Trust

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202406